

DPN 5475

Title: महाकाल तंत्र MAHAKALA TANTRA

Run. No. 6166

Cat. No.

Micro. No.

Subject मंत्र Tantra

Religion: Hindu / Bauddha

Language: Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. / समाधि वाक्य १००० मंत्र

Size in cms. 25.5 x 7.8 Folios 3 Lines (in a page) 5/6

extra folios 1, 3, 7
vera in post colophon

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

लक्ष्मिपति Laxmapati

Date: NS / SS / VS / KS no year figure मादुव २

Ruler / place

Script: New. / Dev. / Bhuja. / Ran. /

Illus. :

Material: palmleaf / paper / thiyasaphu / one side yellow

Condition: fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

इति श्री भगवति हलती भक्तकालकायास्तुतिं समाप्तं ॥ ॥ ...
मिति मादुव वादि नु २ स चोया मया जुल ध्व सुकुलि लक्ष्मिपतिन
धम्मो न चोया जुल धुम् ॥



15

10

5

0 cms.

5

10

15

20

25

महाकालनिम्न

श्री

ॐ तामः ॥ श्री माहाकासां लाय एति वरुसमा प्रथं यथा वृधं वरुते ॐ कलिकया वषट्
 ऋषत्वा गधु गरा ॥ प्रसमारुजेना गधुसुसगमा युधकार न एसा धयम विष्म ननः
 माहावसः माहा म हा मति ॥ ॐ नि वरुते ॐ महा काल साधन ॥ ॥ ॐ स्वाहा ॥ श्री मः
 हा को लाय विष्म मस्योक्तं यस्मै येत्या लिटं रं रुज द्ययै कृष्ण वरुस महा लाड नागर व
 लैन मल्लुनं एक लि कया ल सुप्रथम मधु मा ला प्रविर्त्तं माहा लय ॐ शु वदधि वल लजि कर
 यान क ॥ ॐ नी महा काल सा ॐ कलि सु मति रु द स्यति ॥ ॥ ॐ नमः ॥ श्री मा हा का सा

मातिके सु दिवा मानयेनी ॥ ० ॥ कनेरु का प्र कि किनी सु गण प्र वरुष नि पलं विनी
 सु काम ले च य द व सु क च का ॥ स प प्र पंच हि ज ग प्र व सु गे सु मा दि नि विला सु का दि द ज
 य न प्र मा दी गु सु सन्धि नी ॥ ० ॥ तिला क ग म नि नी सु उ वि च जे पा ये ग वे नो अ वि वि ष
 ष म व चा न ग ग ना दि म र्थ नि ॥ ० ॥ ग वा धि यं क डी कि लं सु ला सु प सु डि न ॥ क
 पा नू वू ह सा नं सु न रु कां वि व रु नि ॥ ० ॥ स रा व सु र्धं रु कि व नु सु र्ध व

ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय ॥ कृष्णं गङ्गां गङ्गां लीयते ॥ ० ॥ ॥ रुद्राक्षमनैः
 कंदूत दया नृपाही मां जगत्समिधया तव मुनि कृष्णामिमांस्तनूना ॥ ० ॥
 ॥ कृष्णं गङ्गां लीयते यथा मिस्रायुतं तवागङ्गां जगत्समागतां विष्णुं मय वाक्ये पला ३
 कं ॥ ० ॥ ॥ किं शीरुगवति हलतीरु कालकायास्तैक मुनिं समाप ॥ ० ॥
 ॥ यद्वर्मा रुद्रपुत्रा वा रुद्रवत्तथा च जानि नूदय ववादि महाशुभनं ॥ ० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ गङ्गा नव गङ्गा गङ्गा महिरया दीवक्क वनरावर्मा
 हादया मया किं भुव ॥ सर्वकार्यपसाधये साधुमिति ॥ सर्ववृद्धसमं धाद स उड स वलि
 मनु ४ सगाद्वनं यद्यदि ती ॥ ॐ ॥ ॐ किं धाद स उड ॥ माहाकाव साधनं समाप
 ॥ ॐ ॥ ॐ मिमिरुद व वदिद्व १ स वायातयो कुलधुमरुलि लयापति नं थडा न वाया
 ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ लयापतिनाम स कुरु वरुं कार्यनियूनन संगम मानशखया फिलद्वै मनवां कि
 न वज्रायि वा र्वदय किं नरु ॥

15

10

5

0 cm

5

10

15

20

25



